International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 521-522

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 521-522
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 21-11-2020
Accepted: 26-12-2020

ऋचा
एम. फिल. शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

श्रुति
एम. फिल. शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
ऋचा
एम. फिल. शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

महाकवि कालिदास की रचना 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का पश्चिमी देशों पर प्रभाव

ऋचा, श्रुति

सारांश
महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के ऐसे चमकते सितारे हैं। जिनकी ज्योति अब भी जगमगाते जन मन को ज्योतिर्मय बना रही है। भारतीय सौंदर्य दर्शन की सभी विभूतियां इनके साहित्य में समाहित है। महाकवि कालिदास संस्कृत के महान कवि तथा नाटककार थे। निर्विवाद रूप से इनकी 7 कृतियों को ही स्वीकृति प्रदान है। जिनमें 3 नाटक(रूपक): अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम् और मालविकाग्निमित्रम्; दो महाकाव्य: रघुवंशम् और कुमारसंभवम्; और दो खण्डकाव्य: मेघदूतम् और ऋतुसंहार सम्मिलित है। कालिदास की सभी रचनाओं में से अभिज्ञानशाकुंतलम् नाटक अपने काव्यात्मक तथा नाटकीय गुणों के कारण विश्व में प्रसिद्ध है। महाकवि कालिदास की रचनाओं से न केवल भारतीय प्रभावित हुए बल्कि इनकी सभी कृतियां विश्व विख्यात हैं। विशेषकर पश्चिमी देशों पर इनका प्रभाव अधिक दिखाई देता है। कालिदास संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएं की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्त्व निरूपित हैं। कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें राष्ट्रीय कवि का स्थान तक देते हैं।

अभिज्ञानशाकुंतलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। मेघदूतम् कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की कल्पनाशक्ति और अभिव्यंजनावादभावाभिव्यन्जना शक्ति अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है और प्रकृति के मानवीकरण का अद्भुत खंडकाव्ये से खंडकाव्य में दिखता है।

कूट शब्द - भाषा, कवि, अभिज्ञानशाकुंतलम्, पश्चिम देश, प्रभाव।

प्रस्तावना

यूरोपीय भाषाओं में अभिज्ञानशाकुंतलम् का अनुवाद

- आंग्ल भाषा में अनुवाद- संस्कृत नाटकों में महाकवि कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुंतलम् ही वह नाटक है। जिसका सर्वप्रथम किसी यूरोपीय भाषा में अनुवाद हुआ।
- विलियम जॉन्स- विलियम जॉन्स ने 1784 रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की। उनके द्वारा 1789 में अभिज्ञानशाकुंतलम् का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया वास्तव में 1788 में उन्होंने पहले लैटिन भाषा में इसका अनुवाद किया था। उसके पश्चात अंग्रेजी में शब्दश: कृति का अनुवाद हुआ | विलियम जॉन्स के इस अनुवाद के बाद शाकुंतलम् का जर्मन, फ्रेंच, डेनिश और इटालियन आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ विलियम जॉन्स द्वारा किए गए अभिज्ञानशाकुंतलम् के अनुवाद का नाम Shakuntala or the fatal ring है। विलियम जॉन्स के इस अनुवाद ने एक दशक में ही प्रसिद्धि को प्राप्त कर लिया|1790 से 1807 के मध्य इंग्लैंड में 5 बार अभिज्ञानशाकुंतलम् का पुनः मुद्रण हुआ| यूरोप में अनेक बार इसका अनुवाद तथा प्रकाशन हुआ| 18वीं शताब्दी के बाद अभिज्ञानशाकुंतलम् का यूरोप की 12 भाषाओं में 46 अनुवाद प्राप्त हुए।
- मोनियर विलियम्स- मोनियर विलियम्स ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में बोडन चेयर के प्रोफेसर, संस्कृत कोष से अंग्रेजी कोष, अंग्रेजी संस्कृत कोष, के विश्वविख्यात रचनाओं के प्रणेता थे। 1853 में प्रसिद्ध संस्कृत व आन्गल विद्वानों में से मोनियर विलियम्स अभिज्ञानशाकुंतलम् से प्रभावित हुए उन्होंने Shakuntala or the lost ring के नाम से 1855 में इस संस्कृत नाटक का मूल नाटक से अत्यंत समानता रखने वाला साहित्यिक अनुवाद प्रकाशित किया। उन्होंने कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुंतलम् के प्रथम 34 पदों में प्रयुक्त भिन्न-भिन्न 11 छंदो की प्रशंसा की सर जॉन लब्बाक ने

विश्व की 100 सर्वश्रेष्ठ कृतियों की सूची तैयार की तो उसमें मोनियर विलियम्स की Shakuntala or the lost ring शामिल थी|

- जर्मन भाषा में अनुवाद- जर्मन विद्वानो में भी अभिज्ञानशाकुंतलम् के प्रति विशिष्ट आकर्षण था।
- जार्ज फॉस्टल- सर्वप्रथम 1791 में इसका जर्मन में अनुवाद किया| इन्होंने भूमिका के अतिरिक्त समस्त नाटक के पद्यों का गद्य में अनुवाद किया| उन्होंने इस अनुवाद को प्रसिद्ध जर्मन साहित्यकार हर्डर को भेजा जिन्होंने इसकी प्रशंसा करते हुए लिखा कि अभिज्ञानशाकुंतलम् एक सर्वश्रेष्ठ कृति है। जो प्रत्येक 2000 वर्ष बाद ही देखने को मिलती है। हर्डर 'शाकुंतलम्' के नाटकीय सिद्धांतों को एक नए मॉडल के रूप में जर्मन नाटककारों को भी अनुभव कराना चाहते थे। वह इससे मंत्रमुग्ध थे जर्मन कवि योहान वुल्फगांग गेटे ने 'शाकुंतलम्' की प्रशंसा में लिखा है। उन्होंने कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् का जर्मन भाषा में अनुवाद किया। गेटे ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् के बारे में कहा था-

  ''यदि तुम युवावस्था के फूल प्रौढ़ावस्था के फल और अन्य ऐसी सामग्रियां एक ही स्थान पर खोजना चाहो जिनसे आत्मा प्रभावित होता हो, तृप्त होता हो और शान्ति पाता हो, अर्थात् यदि तुम स्वर्ग और मर्त्यलोक को एक ही स्थान पर देखना चाहते हो तो मेरे मुख से सहसा एक ही नाम निकल पड़ता है – अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की एक अमर रचना
- फ्रेडरिक श्लेगल- अभिज्ञान शाकुंतलम् से अत्यधिक प्रभावित थे। जर्मनी में शाकुंतलम् का 10 से अधिक बार अनुवाद किया गया 1899, 1912, 1913 में आंग्ल मंच पर शाकुंतलम को प्रस्तुत किया गया।[1]

फ्रेंच भाषा में अनुवाद

फ्रांस भी अभिज्ञानशाकुंतलम् से अपरिचित या अप्रभावित नहीं रहा। 18 वीं शताब्दी के अंत तक फ्रेंच विद्वानों का परिचय भारतीय साहित्य में विद्यमान ज्ञान से हो चुका था। फ्रेंच विद्वान लुई रेनू (जिन्होंने संस्कृत में अत्यधिक कार्य किया) के अनुसार फ्रांस के 3 प्रसिध 'रोमांटिक पीरियड' काल के कवि victor hugo, Lamarthine, Alfried victorde vingny भारतीय साहित्य तथा उपनिषदों से अत्यधिक प्रभावित थे। Lamarthine ने अभिज्ञानशाकुंतलम् को महाकाव्य व नाटक के रूप में सर्वश्रेष्ठ कृति माना है। जो होमर थियोक्रायटस तथा रसों की प्रतिमा से 3 गुना प्रतिभाशाली है। 1825 में फ्रेंच विद्वान जॉब्स डेनियल ने कहा कि हम शाकुंतलम् के 1 अंक से ही परिचित हैं। जिसने संपूर्ण यूरोप को आश्चर्यचकित तथा प्रभावित किया है। फ्रेंच विद्वान चेजी ने शाकुंतलम् के बंगाली संस्करण से फ्रेंच में इसका अनुवाद किया। जो 1830 में प्रकाशित हुआ। आंग्ल विद्वानों में सर विलियम जोंस ने 1774 में एशियाटिक सोसायटी कोलकत्ता की स्थापना कर संस्कृत ग्रंथों का पुनरुद्धार किया विलियम जोंस ने 1779 में अभिज्ञानशाकुंतलम् और ऋतुसंहार का अंग्रेजी में अनुवाद किया। जर्मनी के महाकवि गेट ने महाकवि कालिदास की शाकुंतलम् पर कविता लिखी । अमेरिकन ओरिएंटल सोसायटी जेर्नल में इस विषय पर सर विलियम जोंस ने सर विलियम जोंस एंड शाकुंतलम्, सर विलियम जॉन्स समरी ऑफ़ शाकुंतलम् नाम से 2 उल्लेख प्रकाशित किये।[2]

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य जगत के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। वह प्रकृति का इतना सुंदर वर्णन करते हैं कि सभी कथाएं अपने आप में विचित्र हो जाती हैं। जब पाश्चात्य देशों ने महाकवि कालिदास की कृतियों को पढ़ा तो वह आश्चर्यचकित हो गए और महाकवि कालिदास का अभिज्ञानशाकुंतलम् पाश्चात्य देशों में एक क्रांति की तरह प्रकट हुआ। जिसके अनेक भाषाओं में अनेक अनुवाद हुए तथा अनेको बार इसके प्रकाशन पाश्चात्य देशों में हुए।

सन्दर्भ

1. चतुर्वेदी वासुदेवकृष्ण, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा-2
2. त्रिपाठी बाबूराम, महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञान शाकुन्तलम्, रतन प्रकाशन मंदिर, इंदौर, 1981-82.
3. आचार्य नारायण राम, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, राघवभट्ट टीका सहित, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली, 1997.
4. ठाकुर र., अभिज्ञानशाकुन्तलम्, सरस्वती पुस्तक भण्डार, अहमदावाद, 1988.
5. त्रिपाठी राधावल्लभ, कालिदास परिशीलन सागर, संस्कृत विभाग, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय. 1988.
6. झा रमानाथ, अभिज्ञानशकुन्तलं मैथिलपाठानुगम्, मिथिला विद्यापीठ, बेलवालकर. दरभंगा, 1963.
7. चतुर्वेदी सीताराम, कालिदास-ग्रन्थावली, भरत मुनि, अलीगढ, 1986.
8. भट्ट वसन्तकुमार, अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रतीक – योजना, भाषासाहित्यभवन, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदावाद – 380009

कोश-ग्रन्थ

9. आपटे वामन शिवराम, संस्कृत-हिंदी-कोश, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली, 1987.
10. Lal ram narain. The students practical dictionary, India, 1911.

ईंटरनेट

11. http://www.shodhganga@inflibnet
12. http://www.wikipedia.org/
13. http://www.britannica.com
14. http://www.hinduwisdom.info/

[1] https://hi.m.wikipedia.org/wiki/
[2] https://hi.m.wikipedia.org/wiki/